संस्मरण

मेरे प्राथमिक विद्यालय के दिन

❑ सियाराम सोलंकी

प्राथमिक शिक्षा के दिन बाल्यकाल की हमारी स्मृतियों का ऐसा हिस्सा है जो भुलाये नहीं भूलता। इन समृतियों की प्रस्तुति के पीछे यहां एक मकसद तो यह है कि ऐसी कुछ बातें सामने आ सकें जैसे बच्चे क्या पसंद और क्या नापसंद करते हैं और क्यों ? दूसरे यह कि क्या प्राथमिक स्कूल के परिदृश्य में तब से कोई गुणात्मक फर्क आया है ? हम इस संस्मरण-शृंखला को अभी जारी रखना चाहेंगे ।

पता नहीं मास्टर कैसा होगा ? यह अजीब सा भय मुझे स्कूल जाने से रोकता था। विकल्प यह था कि मैं भैंस चराने चला जाता। घर में व्यक्ति कम थे तो मेरा भैंस चराना किसी को उतना अखरता नहीं था पर माता-पिता चाहते थे कि मैं पढ़ूं ।

एक बार मैं कई दिनों तक स्कूल नहीं गया। अध्यापक ने मेरे दो साथियों को मेरे घर भेजा, वे मुझे पकड़कर ले गये। यह पहली दूसरी कक्षा की बात है। शायद मैं नंगा भी था। अध्यापक ने मुझे अपने सामने पाकर टेबुल पर जोर से डंडा मारा। मैं इतना डर गया कि मेरा पेशाब निकल गया।

कक्षा तीन में हम अध्यापक से किसान की पत्नी व नेवला वाला पाठ पढ़ रहे थे, अध्यापक ने पूछा पत्नी किसको कहते हैं? किसी से उत्तर नहीं आया। मैंने कहा - मैं बताऊं? अध्यापक ने कहा बताओ, मैंने कहा भोटिया ते। अध्यापक के पास आ बैठने वाले मेरे ताऊ ने उसी दिन मुझे एक क्लास उन्नत करवा दिया।

मेरे घर में घड़ी नहीं होती थी। मैं एक व्यक्ति से बहुत बार समय पूछता था। फिर भी अक्सर हम समय से बहुत पहले स्कूल पहुंच जाया करते थे और वहां कुछ शरारतें करते या खेलते रहते थे। कई बार गृहकार्य जैसे पट्टी पर नहीं लिखकर ले जाने पर बहाने बना देते थे कि हमने धूप में सुखा रखी थी बारिश आई और उसे भिगो गई।

अध्यापक मध्यान्तर के बाद गांव से हमेशा लेट आता था। (गांव में ही अन्य व्यक्तियों से बात करता रहता था पर उसका गप्प लड़ाने से मन नहीं हटता था।) स्कूल में कई औरतें अध्यापक के पास आ जाती थीं तथा उससे बात करती रहती थीं। हमारा अध्यापक थोड़ा मोटा था। उसे हम (आगे-पीछे) मोटे मारसाब कहा करते थे। एक बार होली के मौसम में कुछ स्त्रियां उसके पीछे गोबर लेकर उसे बिगाड़ने के लिए दौड़ी, अध्यापक एक जाली में फंस गया जो उतनी बड़ी नहीं थी कि अध्यापक उसमें निकल सके। स्त्रियों ने मौके का फायदा उठाकर उसकी पीठ पर कई थाप बरसाईं।

अध्यापक द्वारा दिया गया काम न आने पर दण्ड का प्रावधान था। एक बार अध्यापक एक छात्र के हाथ पर रोल से मार रहा था। पिटने वाले छात्र के पास एक अन्य छात्र बैठा हुआ था। अध्यापक ने ज्योंही रोल मारी, छात्र ने डर से अपना हाथ पीछे खींच लिया। नीचे बैठे छात्र के सिर पर रोल इतनी जोर से पड़ी कि उसके सिर से खून निकल आया।

एक बार हमारी परीक्षा हो रही थी। एक छात्र अपना बस्ता उठाकर अध्यापक से बोला मारसाहब गैत में कर लाऊं यहां छुरेट हल्ला करें।

स्कूल से छूटने के बाद हम जो भी खेलते थे यदि कोई छात्र उसमें बेईमानी करता तो हम आपसी संवाद में कहते कि काल मारसाब ते कह देंगे। एक बार जब मैं कक्षा चार में पढ़ता था मेरी चचेरी बहन की शादी हुई थी। पहली बार उसे लाने के लिए हम 10-15 व्यक्ति गये थे उनमें मैं भी चला गया।

आने पर पता चला कि तीन परीक्षाएं लग चकुी हैं अब मुझे बड़ा डर था कि मैं फेल होऊंगा। अध्यापक से पिताजी की बात हुई थी। अध्यापक ने आधा किलो घी के बदले मुझे पास कर दिया।

जब हमारे स्कूल का कभी निरीक्षण होता और कोई निरीक्षणकर्ता बाहर से आता तो अध्यापक बड़ी धुक-धुकी में रहते । वे किवाड़ से छिपकर हमें सिलेट पर लिखकर कुछ न कुछ बता देते जिससे कि उन्हें लगे कि हम पढ़ने-लिखने में कमजोर नहीं है।

एक बार एक निरीक्षणकर्ता को अध्यापक के कहने पर हम दो-तीन छात्र चाय बनाकर लाए। हमने सोचा कि ज्यादा चाय व चीनी डालने से हमारी चाय का कुछ महत्व बढ़ जाएगा पर वह चाय लगभग काढ़ा बन चुकी थी जिसे हमने भी चखकर देखा था। अध्यापक ने कहा कि हमने उसकी ऐसी तैसी करा दी है।

अध्यापक परीक्षा में रस्सी व कूंचे की झाड़ू मंगवाता था जिन्हें समेटकर वह अपने घर ले जाता था।

एक बार हमारे स्कूल में एक नये अध्यापक आए। नये अध्यपाक ने हमें पच्चीस में दो का भाग देने को कहा। हम में से कोई नहीं कर पाया । पिछले अधयापक के पढ़ाने और हमारे पढ़ने का रिजल्ट यह निकला कि कोई भी छात्र सवाल ही नहीं कर पाया। ◆

खुशियों का स्कूल

बच्चे साफ दिल से स्कूल आते हैं, उनमें अच्छी तरह पढ़ने की सच्ची अभिलाषा होती है । बच्चे को तो यह सोचकर भी डर लगता है कि कोई उसे आलसी या निकम्मा समझ सकता है । अच्छी तरह पढने की अभिलाषा मुझे उस लौ जैसी लगती है, जो हमारे बाल-जीवन को सार्थक बनाती है, बच्चों की खुशियों की दुनियां को प्रदीप्त करती है । इस लौ को लेकर, जो कटु शब्दों या उदासीनता के जरा से झौंके से बुझ सकती है, बच्चा असीम विश्वास के साथ शिक्षक के पास आता है और अगर आप बच्चे की अभिलाषा को नहीं देखते हैं, तो इसका अर्थ है कि आप अपने छात्रों के वर्तमान और भविष्य के लिए उत्तरदायित्व की हर्षमय और साथ ही उद्विग्नतापूर्ण भावना से वंचित हैं। पढ़ाई में बच्चे की सफलता, इस विचार की सगर्व चेतना और अनुभूति कि मैं आगे कदम बढ़ा रहा हूँ, ज्ञान के दुर्गम मार्ग पर अग्रसर हो रहा हूँ - केवल यही वह प्राणदायी वायु है, जो ज्ञान-पिपासा की इस हल्की लौ को बुझने से बचा सकती है ।

● ● ●

''खुशियों के स्कूल'' का जीवन किन्हीं सख्त सीमाओं में नही बंधा हुआ था । हमने ऐसा कोई नियम नहीं बनाया था कि बच्चों को कितनी देर तक नीले आकाश तले रहना चाहिए । सबसे बड़ी बात तो यह थी कि बच्चे उकता न जाएं कि बच्चे मन ही मन उस क्षण का इंतजार न करने लगें, जब अध्यापक कहेगा : ''अच्छा, अब घर जाओ'' । मैं स्कूल का काम ऐसे वक्त पर खत्म करने की कोशिश करता था, जबकि प्रेक्षण के विषय में या जो काम हम कर रहे होते थे, उसमें बच्चों की रुचि तीव्र होती थी । बच्चों को बेसब्री से कल का इंतजार करने दो, उन्हें आने वाले दिन से नयी खुशियों की आशा करने दो, उन्हें सपने में वे रुपहली चिनगारियां देखने दो, जो सूरज धरती पर बिखेरता है । एक दिन बच्चे घंटा-डेढ़ घंटा नीले गगन तले रहते और दूसरे दिन चार घंटे । यह सब इस बात पर निर्भर होता कि अध्यापक बच्चों को उस दिन कितनी खुशियां दे पाता है ।

एक और बात बहुत महत्त्वपूर्ण है, वह यह कि हर बच्चा स्वयं खुशी अनुभव ही न करे, बल्कि वह भी दूसरों को खुशियां दे, कि बाल-समुदाय के जीवन में उसके सृजन का अंश भी हो ।

वसीली सुखोम्लीन्स्की

' बाल हृदय की गहराइयां ' से